कल्पवृक्ष

इस कल्प वृक्ष द्वारा, मनुष्य-सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त के विराट रूप के साक्षात्कार से मनुष्य 'नष्टोमोहः, स्मृतिलब्धः' और 'मन्मना' हो, कर विकर्माजीत चक्रवर्ती दैवी स्वराज्य पद पाता है ।

कल्प वृक्ष का बीज

गीता के निराकार भगवान 'ज्योतिर्लिङ्गम्' शिव, ब्रह्मा जी के मुख कमल द्वारा कहते हैं :–

हे वत्सों ! यह विराट मनुष्य सृष्टि एक उल्टे वृक्ष के समान है। मैं इसका अविनाशी बीजरूप हूँ और इस सृष्टि के सूर्य और तारों के प्रकाश के भी पार, ब्रह्मलोक में निवास करता हूँ । मैं अव्यक्तमूर्त परमात्मा इस व्यक्त सृष्टि में सर्वव्यापक नहीं हूँ । बल्कि जैसे एक साधारण बीज में सारे वृक्ष के आदि, मध्य तथा अन्त के विकास के संस्कार होते हैं वैसे ही मुझ में भी इस सृष्टि का त्रैकालिक ज्ञान है । अतः केवल मैं ही सर्वज्ञ और त्रिकालदर्शी हूँ। इस कारण मैं ही इस रचना का सत्य ज्ञान पुराने वृक्ष के अन्त और नये वृक्ष के पुनः स्थापना के समय देता हूँ।

हे वत्सों ! प्रत्येक साधारण वृक्ष का बीज एक ही होता है । इसी प्रकार मैं बीजरूप परमात्मा भी एक ही हूँ । अन्य सभी मनुष्य मुझ भगवान का रूप नहीं बल्कि मुझ अनादि और अपरिवर्तनीय बीजरूप की सत्य रचना है । इस रचनारूपी वृक्ष को मिथ्या मानना मानो मुझ बीजरूपी परमात्मा को मिथ्या मानना है।

कल्प वृक्ष की आदि

हे वत्सों ! कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगम समय, मैं आदि देव ब्रह्मा के मुख कमल द्वारा गीता ज्ञान और योग की शिक्षा से सतयुगी और त्रेतायुगी सत्वगुणी दैवी सृष्टि का स्थापना करता हूँ। उन दोनों युगों की सृष्टि को 'ब्रह्मा का दिन' कहा जाता है । उस सृष्टि में विकार, दुख तथा अशान्ति नाम मात्र भी नहीं होते । अतः उसे 'स्वर्ग' कहते हैं।

कल्पवृक्ष का मध्य

द्वापर युग से विकारों, अशान्ति तथा दुखों का आरम्भ होता है । उस समय से इस्लाम मत, बुद्ध मत, ईसाई मत आदि एक दूसरे के पश्चात् स्थापित होने लगते हैं और भक्ति, शास्त्र, यज्ञ, तप, वैराग्य, अनेक प्रकार के योग, कर्मकाण्ड इत्यादि शुरू होते हैं । परन्तु मैं वेदों, शास्त्रों अथवा इन मार्गों से नहीं मिलता हूँ । भक्तों साधकों की मनो- कामना भी मैं ही अल्प काल के लिये पूर्ण कराता हूँ और उनके इष्ट का साक्षात्कार भी करा देता हूँ । दुर्गति के इन दो युगों को 'ब्रह्मा की रात्रि' और इस काल की सृष्टि को 'नरक' कहते हैं।

कल्पवृक्ष का अन्त

कलियुग के अन्त तक जब सभी मनुष्यात्मायें पतित हो जाती हैं

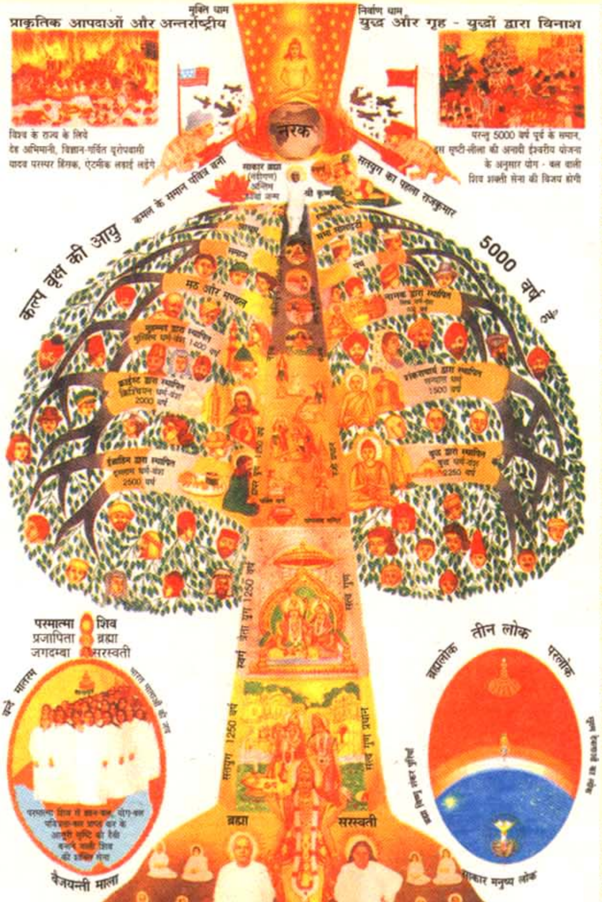

सब का सद्गतिदाता एक भगवान शिव है

त्रिमूर्ति, सृष्टि-चक्र और कल्प वृक्ष की व्याख्या से स्पष्ट है कि विकारों के कारण दुर्गति को प्राप्त हुए सभी पापी लोगों, भक्तों, साधुओं इत्यादी का ज्ञान तथा स्वराज्य योग बल द्वारा, उद्धार करने वाला मैं, गीता का निराकार भगवान, सृष्टि का बीजरूप, त्रिमूर्ति परमात्मा शिव ही हूँ जो कि संगम समय ब्रह्मा द्वारा जीवनमुक्ति और शंकर द्वारा मुक्ति देता हूँ ।

और यह मनुष्य-सृष्टिरूपी वृक्ष पूर्ण वृद्धि को प्राप्त हो जर्जरीभूत हो जाता है, तब मैं सतयुगी दैवी सृष्टि का कलम लगाने के लिये ब्रह्मा के भाग्यशाली रथ अर्थात् तन में अपने परमधाम से आकर अवतरित होता हूँ और भारत की माताओं, कन्याओं, गोपियों अथवा शक्तियों (जिन्हें कि 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारियाँ' भी कहा जाता है) को ज्ञानामृत का कलश देता हूँ । तब ही मैं निज अव्यक्त रूप का, तीनों देवताओं के वास्तविक रूपों का, वैकुण्ठ का, महाविनाश का साक्षात्कार भी करा देता हूँ।

वैजयन्ती माला व गंगाएं

इन्हीं ज्ञान गंगाओं अथवा योगबल वाली शक्तियों की अलौकिक सेवा के कारण भारत में कन्याओं अथवा शक्तियों की महिमा है। वैजयन्ती माला के 108 मणके इन्हीं कन्याओं, मताओं तथा गोपों-पाण्डवों के, युगल मणका लक्ष्मी-नारायण का तथा फूल मुझ निराकार परमात्मा शिव का प्रतीक है।

पुनरावृत्ति :- फिर द्वापर युग में जब कि आदि सनातन दैवी धर्म वाले लोग विकारी हो जाते हैं तथा इस्लाम, बुद्ध, क्रिश्चियन मत आदि स्थापन होकर, कलियुग के अन्त तक वृद्धि को प्राप्त होते हैं, तब मैं पुनः स्वयं अनेक अधर्म विनाश और एक आदि सनातन देवी-देवता सत्धर्म की पुनर्स्थापना का ईश्वरीय कर्तव्य करता और कराता हूँ। इस प्रकार अनादि काल से पाँच हजार वर्षों का यह सृष्टि चक्र कल्प-कल्प पुनरावृत होता है।

अतः मुझे इस मनुष्य लोक में सर्वव्यापी समझना महान भूल है । यदि मैं मनुष्य लोक में सर्वव्यापी होता तो न कभी धर्म की ग्लानी होती, न युग परिवर्तन होता, न ही कोई मनुष्य विकारी, दुःखी, अशान्त होता।

परमात्मा का पुनः अवतरण

वत्सों ! स्पष्ट है कि अब सभी आत्मायें तथा सभी धर्म-वंश अपनी-अपनी स्वर्ण(Golden), रजत(Silver), ताम्र(Copper) तथा लोह(Iron) अवस्थाओं को पार कर चुकी हैं और अब सभी अपनी तमो प्रधान तथा आसुरी संस्कारों वाली अवस्था में हैं।

जिस ज्ञान और योग द्वारा मैं ने पहले भारत में श्री लक्ष्मी-श्री नारायण तथा श्री सीता-श्री राम का दैवी स्वराज्य स्थापन किया था वह अब प्रायः लोप हो गया है, जिसके परिणामस्वरूप अब भारत कंगाल मुहताज हो गया है । अतः सतयुग दैवी सृष्टि की स्थापना अर्थ मैं पुनः अवतरित हुआ हूँ।

(तत्कालीन) मुख्य केन्द्र
ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय
पाण्डव भवन
माउन्ट आबू (राजस्थान)
भारत वर्ष

भगवान शिव कहते हैं :-

मनुष्यात्माओं ने तो संसार में मिथ्या ज्ञान फैलाया है कि आत्मा ही शिव है, परमात्मा सर्वव्यापी है, आत्मा निर्लेप है, मनुष्यात्मा 84 लाख योनियाँ धारण करती हैं, कल्प की आयु करोड़ों वर्ष है, गीता का ज्ञान श्री कृष्ण ने द्वापर युग में दिया, श्री कृष्ण को 108 पटरानियाँ थीं, श्री राम की सीता चुराई गई इत्यादि, इत्यादि । इस

अधिक स्पष्टीकरण के लिये
(वर्तमान कालीन) अन्य केन्द्र
आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय
• A-1,351-352, विजयविहार, रिठाला, दिल्ली-110 085

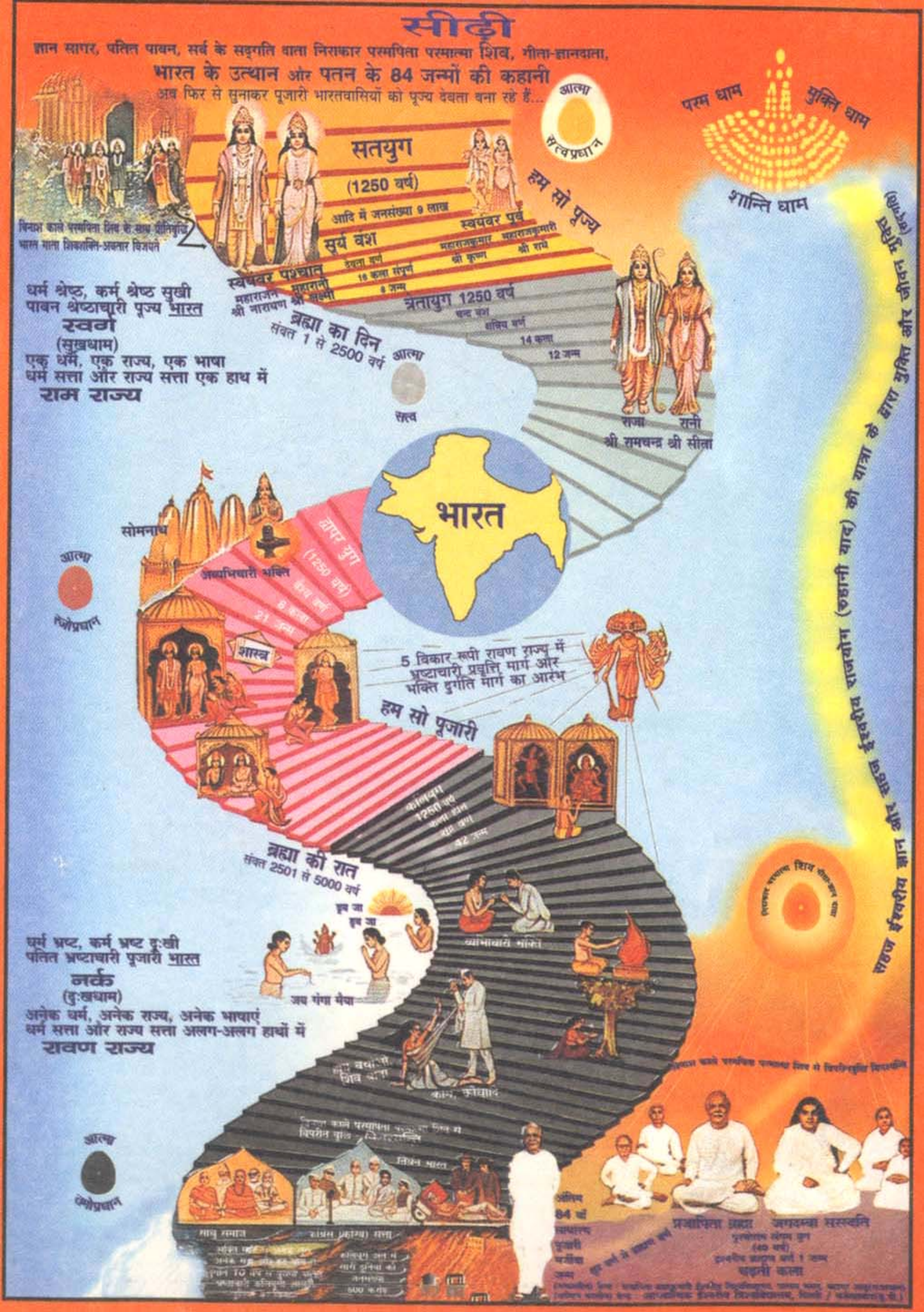
सीढ़ी
ज्ञान सागर, पतित पावन, सर्व के सद्गति दाता निराकार परमपिता परमात्मा शिव, गीता-ज्ञानदाता,
भारत के उत्थान और पतन के 84 जन्मों की कहानी
अब फिर से सुनाकर पुजारी भारतवासियों को पूज्य देवता बना रहे हैं...
आत्मा
सतोप्रधान
परम धाम
मुक्ति धाम
शान्ति धाम
सतयुग
(1250 वर्ष)
आदि में जनसंख्या 9 लाख
स्वयंवर पूर्व
सूर्य वंश
हम सो पूज्य
महाराजकुमार श्री कृष्ण
महाराजकुमारी श्री राधे
स्वयंवर पश्चात
महाराजन श्री नारायण
महारानी श्री लक्ष्मी
देवता वर्ण
16 कला संपूर्ण
8 जन्म
त्रेतायुग 1250 वर्ष
चन्द्र वंश
क्षत्रिय वर्ण
14 कला
12 जन्म
ब्रह्मा का दिन
संवत 1 से 2500 वर्ष
आत्मा
सतो
राजा रानी
श्री रामचन्द्र श्री सीता
धर्म श्रेष्ठ, कर्म श्रेष्ठ सुखी
पावन श्रेष्ठाचारी पूज्य भारत
स्वर्ग
(सुखधाम)
एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा
धर्म सत्ता और राज्य सत्ता एक हाथ में
राम राज्य
भारत
सोमनाथ
अव्यभिचारी भक्ति
द्वापर युग
(1250 वर्ष)
वैश्य वर्ण
8 कला
21 जन्म
आत्मा
रजोप्रधान
शास्त्र
5 विकार रूपी रावण राज्य में
भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति मार्ग और
भक्ति दुर्गति मार्ग का आरम्भ
हम सो पुजारी
कलियुग
1250 वर्ष
42 जन्म
ब्रह्मा की रात
संवत 2501 से 5000 वर्ष
डूब जा
डूब जा
व्यभिचारी भक्ति
जय गंगा मैया
धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट दुःखी
पतित भ्रष्टाचारी पुजारी भारत
नर्क
(दुःखधाम)
अनेक धर्म, अनेक राज्य, अनेक भाषाएं
धर्म सत्ता और राज्य सत्ता अलग-अलग हाथों में
रावण राज्य
आत्मा
तमोप्रधान
साधु समाज
प्रजापिता ब्रह्मा
जगदम्बा सरस्वती
राजयोग (पढ़ाई याद) की यात्रा के द्वारा मुक्ति और जीवन मुक्ति

त्रिमूर्ति

परमात्मा शिव से प्राप्त, रचयिता और रचना के बारे में, इस प्रायः लुप्त ज्ञान और योग से पुनः नर से श्री नारायण या श्री राम और नारी से श्री लक्ष्मी या श्री सीता पद प्राप्त हो रहा है

परमात्मा का नाम और रूप

ज्ञानामृत के सागर परमप्रिय भगवान शिव कहते हैं :-

प्रिय वत्सो ! मैं नाम और रूप से न्यारा या सर्वव्यापी नहीं हूँ। बल्कि मेरा नाम 'शिव' है और मेरा अव्यक्त रूप 'ज्योतिर्लिङ्ग' है। ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर का भी रचयिता होने के कारण मैं त्रिमूर्ति भी कहलाता हूँ। मेरा अव्यक्त 'ज्योतिर्लिङ्ग' रूप ना तो देवताओं के सूक्ष्म शरीर के रूप के समान है और ना ही मनुष्यात्माओं के स्थूल शरीर के सदृश्य है। इस कारण मुझे 'निराकार' भी कहा जाता है।

परमधाम

मैं 'निराकार' अर्थात् अशरीरी परमात्मा स्थूल देहधारी मनुष्यों की इस सृष्टि से तथा सूक्ष्म देहधारी देवताओं के लोक से भी पार 'ब्रह्मलोक' में निवास करता हूँ। सालिग्राम रूपी मनुष्यात्माएं भी निर्वाण अवस्था में ब्रह्मलोक में ही ब्रह्मज्योति महतत्व में निवास करती हैं। वहाँ से ही हर एक अशरीरी आत्मा अपने२ समय पर इस मनुष्य सृष्टि में आकर अपने२ अनादि संस्कारों के अनुसार अनादि निश्चित लीला करती हैं। मैं गीता का निराकार भगवान भी उसी परमधाम से संगम समय पर मनुष्य-सृष्टि-मंच पर अपना अनादि कर्तव्य करने आता हूँ।

रचना का रहस्य

बहुत काल से बिछड़े हुए प्रिय दैवी वत्सो, पाँच विकार रूपी माया से हारे हार, माया पर मेरे द्वारा जीते जीत का अर्थात् आधा कल्प हार, आधा कल्प जीत का पाँच मुख्य युग, पाँच मुख्य धर्मों वाला एक अनादि बना बनाया सृष्टि ड्रामा है, जो कल्प२ (हर ५००० वर्षों) फिर से रिपीट होता रहता है, जिसका क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य ऐक्टर, ड्रामा के आदि, मध्य, अन्त को जानने वाला पारलौकिक परम प्रिय परमपिता-शिक्षक-सतगुरू पतित पावन निराकार चैतन्य जन्म-मरण रहित निराकार, गीता का भगवान त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का रचयिता) शिव वा सोमनाथ मैं हूँ। मैं कल्प-कल्प, कल्प के सुहावने धार्मिक (AUSPICIOUS) संगम युग (CONFLUENCE YUGA) में, सतयुगी आदि सनातन देवी-देवता (DEITY) धर्म की ब्रह्मा द्वारा सहज ज्ञान और सहज राजयोग बल से स्थापना, कलियुगी अनेक आसुरी धर्मों का शंकर द्वारा महाभारी महाभारत मूसल लड़ाई और प्राकृतिक आपदाओं से विनाश और विष्णु द्वारा दैवी धर्म की पालना कराने एक ही बार अवतरित होता हूँ।

अवतरण का समय

हे वत्सो ! कलियुग के अन्त तक जन्म-मरण में आते२ जब सभी धर्म-संस्थापक और उनकी वंशावलियों की अन्य सभी मनुष्यात्माएं अपनी सुख-दुःख की चारों अवस्थाओं को पार कर अति प्रबल माया अर्थात् विकारों के कारण धर्म-भ्रष्ट, कर्म-भ्रष्ट, योग-भ्रष्ट और आसुरी स्वभाव वाली हो जाती हैं, तब मैं, जो ही जन्म-मरण, सुख-दुःख, लेप-क्षेप से न्यारा, सदा एक रस, सदा 'जागति-ज्योति', सब का पारलौकिक परमपिता-शिक्षक-गुरू, धर्मराज, त्रिमूर्ति और त्रिकालदर्शी अर्थात् सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त को जानने वाला योगेश्वर, सर्व शक्तिमान, विश्व अधिकारी पतित-पावन हूँ; सबको माया के बन्धन से छुड़ाने, दिव्य बुद्धि और दिव्य दृष्टि द्वारा मुक्तिधाम और जीवनमुक्तिधाम की राह दिखाने और सब के विकर्म विनाश कर सद्गति करने अर्थ आत्माओं को उनके मूल, पवित्र पारलौकिक अवस्था में लाने के लिए तीन दिव्य कर्म करता और कराता हूँ।

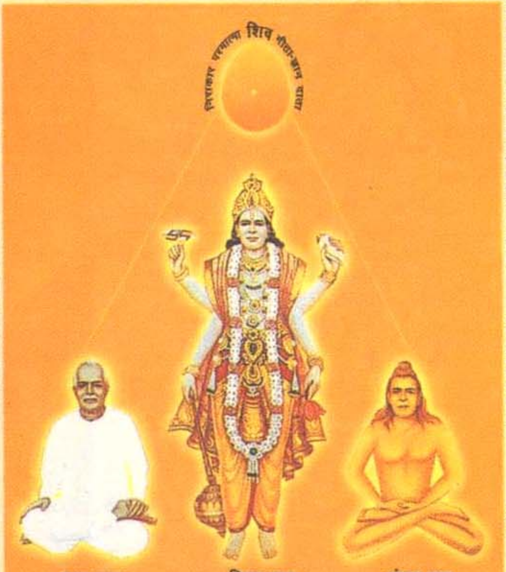

ब्रह्मा द्वारा | **विष्णु द्वारा** | **शंकर द्वारा**

दिव्य जन्म और कर्तव्य

स्थापना :- मैं कलियुग के अन्त और नये सतयुग के आदि के संगम समय परमधाम से अवतरित होकर श्री कृष्ण अर्थात् श्री नारायण के चौरासीवें जन्म के साधारण वृद्ध मनुष्य तन में प्रवेश करता हूँ। मेरे ऐसे अलौकिक जन्म के पश्चात् उस मनुष्य को 'आदि देव ब्रह्मा' या 'आदम' कहा जाता है। उसके मुख कमल द्वारा मैं पुनः प्रायः लुप्त गीता ज्ञान और योग की शिक्षा देता हूँ। इस ज्ञान व योग

द्वारा 'ब्रह्मा' और उनकी मुखवंशावली 'सरस्वती' भविष्य सतयुगी सृष्टि के आरम्भ में पुनः श्री नारायण और श्री लक्ष्मी (स्वयंवर पूर्व श्री कृष्ण और श्री राधे) पद पाते हैं। इस ज्ञान और योग के बल से पाँचों विकारों पर विजय प्राप्त कर सत्वप्रधान संस्कार धारण करने वाले नर-नारी सतयुगी सुर्यवंश में और सत्वगुण सामान्य संस्कारों वाले नर-नारी त्रेतायुगी चन्द्रवंशी जीवनमुक्त देवी-देवता पद प्राप्त करते हैं। इस प्रकार मुझ जगदगुरू शिव द्वारा कल्प में एक ही बार संगम युग में ज्ञानामृत प्राप्त करने के बाद सतयुग और त्रेतायुग के सर्वोत्तम प्रारब्धकाल में ज्ञान या साधना की आवश्यकता ही नहीं होती।

विनाश :- स्थापना की समाप्ति तक मैं ही शंकर द्वारा यूरोपवासी वैज्ञानिकों अर्थात् यादवों तथा भारतवासी देहअभिमानीयों अर्थात् कौरवों को विनाश अर्थ प्रेरता हूँ। इस प्रकार ऐटम व हाइड्रोजन बम्बों, गृह युद्धों, प्राकृतिक आपदाओं, आदि द्वारा महाविनाश करा कर सभी आत्माओं को वापस मुक्तिधाम ले जाता हूँ।

पालना :- इसके पश्चात् विष्णु चतुर्भुज लक्ष्य द्वारा स्थापित की हुई सतयुगी तथा त्रेतायुगी जीवनमुक्त दैवी सृष्टि की पालना भी मैं ही श्री लक्ष्मी-श्री नारायण, श्री सीता-श्री राम आदि द्वारा कराता हूँ।

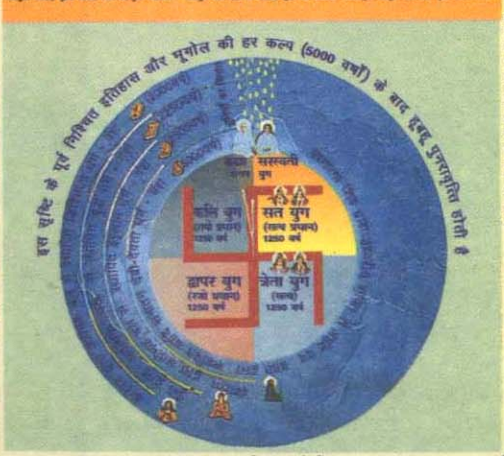

अब भगवान शिव कहते हैं

जो मनुष्यात्मा सब को पवित्रता-सुख-शान्ति देने वाले, सृष्टि के रचयिता मुझ परमात्मा को, तथा सृष्टि लीला के मुख्य अभिनेताओं (ऐक्टर्स) के जन्म-पुनर्जन्म की कर्म-कहानी को, तथा विश्व के इतिहास के कुल समय और पुनरावृत्ति के रहस्य को अब मुझ त्रिकालदर्शी परमात्मा शिव द्वारा नहीं जानता, या जान कर नर से नारायण बनने का सर्वोत्तम पुरुषार्थ नहीं करता, वह मनुष्य मंद बुद्धि है।

परमात्मा और देवताओं आदि का यह चित्र दिव्य चक्षु द्वारा साक्षात्कार तथा दिव्य बुद्धि द्वारा अनुभव ही के आधार पर बनाया गया है।

एडवांस कोर्स

त्रिमूर्ति

परमात्मा शिव से प्राप्त, रचयिता और रचना के बारे में, इस प्रायः लुप्त ज्ञान और योग से पुनः नर से श्री नारायण या श्री राम और नारी से श्री लक्ष्मी या श्री सीता पद प्राप्त हो रहा है

परमात्मा का नाम और रूप

ज्ञानामृत के सागर परमप्रिय भगवान शिव कहते हैं :-

प्रिय वत्सों ! मैं नाम और रूप से न्यारा या सर्वव्यापी नहीं हूँ । बल्कि मेरा नाम 'शिव' है और मेरा अव्यक्त रूप 'ज्योतिर्लिङ्गम' है । ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर का भी रचयिता होने के कारण मैं त्रिमूर्ति भी कहलाता हूँ । मेरा अव्यक्त 'ज्योतिर्लिङ्गम' रूप ना तो देवताओं के सूक्ष्म शरीर के रूप के समान है और ना ही मनुष्यात्माओं के स्थूल शरीर के सदृश्य है । इस कारण मुझे 'निराकार' भी कहा जाता है ।

परमधाम

मैं 'निराकार' अर्थात् अशरीरी परमात्मा स्थूल देहधारी मनुष्यों की इस सृष्टि से तथा सूक्ष्म देहधारी देवताओं के लोक से भी पार 'ब्रह्मलोक' में निवास करता हूँ । सालिग्राम रूपी मनुष्यात्माएं भी निर्वाण अवस्था में ब्रह्मलोक में ही ब्रह्मज्योति महतत्व में निवास करती हैं । वहाँ से ही हर एक अशरीरी आत्मा अपने२ समय पर इस मनुष्य सृष्टि में आकर अपने२ अनादि संस्कारों के अनुसार अनादि निश्चित लीला करती हैं । मैं गीता का निराकार भगवान भी उसी परमधाम से संगम समय पर मनुष्य-सृष्टि-मंच पर अपना अनादि कर्तव्य करने आता हूँ ।

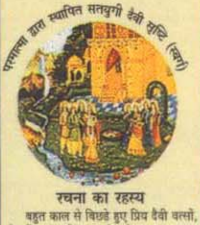

रचना का रहस्य

बहुत काल से बिछड़े हुए प्रिय दैवी वत्सों, पाँच विकार रूपी माया से हारे हार, माया पर मेरे द्वारा जीते जीत का अर्थात् आधा कल्प हार, आधा कल्प जीत का पाँच मुख्य युग, पाँच मुख्य धर्मों वाला एक अनादि बना बनाया सृष्टि ड्रामा है, जो कल्प२ (हर ५००० वर्ष) फिर से रिपीट होता रहता है, जिसका क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य ऐक्टर, ड्रामा के आदि, मध्य, अन्त को जानने वाला पारलौकिक परम प्रिय परमपिता-शिक्षक-सतगुरू पतित पावन निराकार चैतन्य जन्म-मरण रहित निराकार, गीता का भगवान त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का रचयिता) शिव वा सोमनाथ मैं हूँ। मैं कल्प-कल्प, कल्प के सुहावने धार्मिक (AUSPICIOUS) संगम युग (CONFLUENCE YUGA) में, सतयुगी आदि सनातन देवी-देवता (DEITY) धर्म की ब्रह्मा द्वारा सहज ज्ञान और सहज राजयोग बल से स्थापना, कलियुगी अनेक आसुरी धर्मों का शंकर द्वारा महामारी महाभारत मूसल लड़ाई और प्राकृतिक आपदाओं से विनाश और विष्णु द्वारा दैवी धर्म की पालना कराने एक ही बार अवतरित होता हूँ ।

अवतरण का समय

हे वत्सों ! कलियुग के अन्त तक जन्म-मरण में आते२ जब सभी धर्म-संस्थापक और उनकी वंशावलियों की अन्य सभी मनुष्यात्माएं अपनी सुख-दुःख की चारों अवस्थाओं को पार कर अति प्रबल माया अर्थात् विकारों के कारण धर्म-भ्रष्ट, कर्म-भ्रष्ट, योग-भ्रष्ट और आसुरी स्वभाव वाली हो जाती हैं, तब मैं, जो ही जन्म-मरण, सुख-दुःख, लेप-क्षेप से न्यारा, सदा एक रस, सदा 'जागति-ज्योति', सब का पारलौकिक परमपिता-शिक्षक-गुरू, धर्मराज, त्रिमूर्ति और त्रिकालदर्शी अर्थात् सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त को जानने वाला योगेश्वर, सर्व शक्तिमान, विश्व अधिकारी पतित-पावन हूँ; सबको माया के बन्धन से छुड़ाने, दिव्य बुद्धि और दिव्य दृष्टि द्वारा मुक्तिधाम और जीवनमुक्तिधाम की राह दिखाने और सब के विकर्म विनाश कर सद्गति करने अर्थ आत्माओं को उनके मूल, पवित्र पारलौकिक अवस्था में लाने के लिए तीन दिव्य कर्म करता और कराता हूँ।

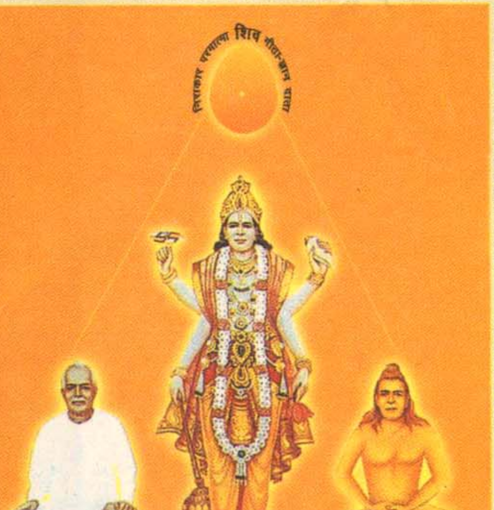

ब्रह्मा द्वारा **विष्णु द्वारा** **शंकर द्वारा**

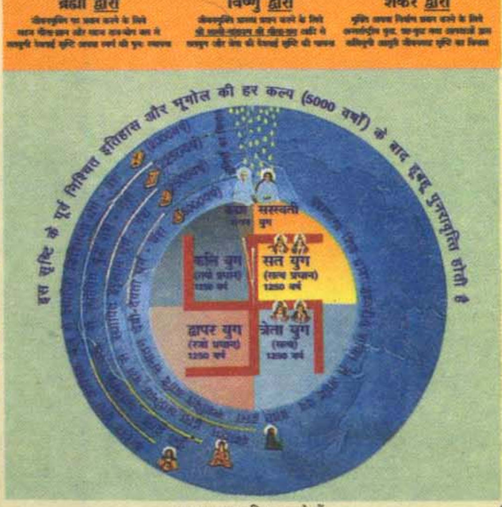

दिव्य जन्म और कर्तव्य

स्थापना :- मैं कलियुग के अन्त और नये सतयुग के आदि के संगम समय परमधाम से अवतरित होकर श्री कृष्ण अर्थात् श्री नारायण के चौरासीवें जन्म के साधारण वृद्ध मनुष्य तन में प्रवेश करता हूँ। मेरे ऐसे अलौकिक जन्म के पश्चात् उस मनुष्य को 'आदि देव ब्रह्मा' या 'आदम' कहा जाता है । उसके मुख कमल द्वारा मैं पुनः प्रायः लुप्त गीता ज्ञान और योग की शिक्षा देता हूँ । इस ज्ञान व योग

द्वारा 'ब्रह्मा' और उनकी मुखवंशावली 'सरस्वती' भविष्य सतयुगी सृष्टि के आरम्भ में पुनः श्री नारायण और श्री लक्ष्मी (स्वयंवर पूर्व श्री कृष्ण और श्री राधे) पद पाते हैं । इस ज्ञान और योग के बल से पाँचों विकारों पर विजय प्राप्त कर सत्वप्रधान संस्कार धारण करने वाले नर-नारी सतयुगी सूर्यवंश में और सत्वगुण सामान्य संस्कारों वाले नर-नारी त्रेतायुगी चन्द्रवंशी जीवनमुक्त देवी-देवता पद प्राप्त करते हैं । इस प्रकार मुझ जगदगुरू शिव द्वारा कल्प में एक ही बार संगम युग में ज्ञानामृत प्राप्त करने के बाद सतयुग और त्रेतायुग के सर्वोत्तम प्रारब्धकाल में ज्ञान या साधना की आवश्यकता ही नहीं होती।

विनाश :- स्थापना की समाप्ति तक मैं ही शंकर द्वारा यूरोपवासी वैज्ञानिकों अर्थात् यादवों तथा भारतवासी देहअभिमानीयों अर्थात् कौरवों को विनाश अर्थ प्रेरता हूँ । इस प्रकार ऐटम व हाइड्रोजन बम्बों, गृह युद्धों, प्राकृतिक आपदाओं, आदि द्वारा महाविनाश करा कर सभी आत्माओं को वापस मुक्तिधाम ले जाता हूँ ।

पालना :- इसके पश्चात् विष्णु चतुर्भुज लक्ष्य द्वारा स्थापित की हुई सतयुगी तथा त्रेतायुगी जीवनमुक्त दैवी सृष्टि की पालना भी मैं ही श्री लक्ष्मी-श्री नारायण, श्री सीता-श्री राम आदि द्वारा कराता हूँ ।

अब भगवान शिव कहते हैं

जो मनुष्यात्मा सब को पवित्रता-सुख-शान्ति देने वाले, सृष्टि के रचयिता मुझ परमात्मा को, तथा सृष्टि लीला के मुख्य अभिनेताओं (ऐक्टर्स) के जन्म-पुनर्जन्म की कर्म-कहानी को, तथा विश्व के इतिहास के कुल समय और पुनरावृत्ति के रहस्य को अब मुझ त्रिकालदर्शी परमात्मा शिव द्वारा नहीं जानता, या जान कर नर से नारायण बनने का सर्वोत्तम पुरुषार्थ नहीं करता, वह मनुष्य मंद बुद्धि है ।

परमात्मा और देवताओं आदि का यह चित्र दिव्य चक्षु द्वारा साक्षात्कार तथा दिव्य बुद्धि द्वारा अनुभव ही के आधार पर बनाया गया है ।

आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय

लक्ष्मी-नारायण
स्वर्ग के रचयिता और उनकी दैवी रचना

परमात्मा (परम-आत्मा) का परिचय

ज्ञान सागर, पतित पावन, सर्व के सद्गतिदाता, गीता ज्ञान दाता शिव भगवानुवाच :-

हे वत्सों ! मैं नाम और रूप से न्यारा व सर्वव्यापी नहीं हूँ । मेरा नाम 'शिव' है, रूप अव्यक्त ज्योतिबिन्दु है, अखंड ज्योति ब्रह्म-महातत्व मेरा और तुम आत्माओं का निवास स्थान है । ब्रह्मा, विष्णु और शंकर देवताओं का भी रचयिता होने के कारण मैं त्रिमूर्ति शिव भी कहलाता हूँ ।

अब मैं प्रजापिता ब्रह्मा के साधारण वृद्ध तन में दिव्य प्रवेश करके मनुष्य सृष्टि के आदि, मध्य और अंत का सहज ज्ञान तथा राजयोग सिखाकर तुम भारतवासियों को पुनः पतित से पावन बना रहा हूँ । इस अहिंसक ज्ञान और योग बल से स्वर्ग या वैकुण्ठ का सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी दैवी रामराज्य, जो भारत के कॉंग्रेस पति बापू गांधीजी चाहते थे, सो मैं पांडवपति सृष्टि का बापूजी, ब्रह्मा मुख वंशावली शिवशक्ति पाण्डव सेना द्वारा स्थापन कर रहा हूँ ।

साथ ही साथ महादेव शंकर द्वारा प्रेरित हेवनहार कल्याणकारी, महाभारी महाभारत लड़ाई और प्राकृतिक आपदाओं द्वारा कलियुगी आसुरी सृष्टि का महाविनाश कराकर सर्व आत्माओं के लिये मुक्ति या शांतिधाम जाने का द्वार खोल रहा हूँ ।

एकज भूल

प्रिय वत्सों ! ५००० वर्ष पूर्व महाभारत के समय मैंने ही अविनाशी ज्ञान सुनाया था जिसका यादगार शास्त्र श्रीमद् भगवद्गीता गाया जाता है । परन्तु भारतवासियों की सबसे बड़ी भूल यही है कि सर्व शास्त्रमयी शिरोमणी श्रीमद् भगवद्गीता पर मुझ ज्ञान-सागर, गीता-ज्ञान दाता, दिव्य चक्षु विधाता, पतित-पावन, जन्म-मरण रहित, सदा मुक्त, सभी धर्म वालों के गति-सद्गति दाता परमपिता परमात्मा शिव का नाम बदल, ८४ जन्म लेने वाले, सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सतोप्रधान सतयुग के प्रथम राजकुमार श्री कृष्ण (जिसने स्वयं इस गीता द्वारा यह पद पाया है) का नाम लिख कर भगवद्गीता को ही खंडन कर दिया है । इस कारण ही भारतवासी मेरे से योग भ्रष्ट हो धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट, पतित, कंगाल, दुःखी बन गये हैं ।

यदि भारत के विद्वान, आचार्य, पंडित यह भूल न करते तो सृष्टि के सभी धर्म वाले श्रीमद् भागवद्गीता को मुझे निवार्ण धाम ले जाने वाले पंडे (LIBERATOR & GUIDE) परमप्रिय परमपिता शिव के महावाक्य समझ कितने प्रेम और श्रद्धा से अपना धर्म शास्त्र समझ पढ़ते । और भारत को मुझ परमपिता की जन्मभूमि (GOD'S BIRTH PLACE) समझ इसको अपना सर्वोत्तम तीर्थस्थान मानते।

ईश्वरीय संदेश

आने वाले १० वर्षों में भारत से भ्रष्टाचार और विकारों का अन्त होने वाला है तथा हेवनहार विश्वयुद्ध के पश्चात् सतयुगी सूर्यवंशी श्री लक्ष्मी-श्री नारायण का राज्य शीघ्र ही आने वाला है ।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारियाँ और ब्रह्माकुमार

श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के ८४ जन्मों की सत्य कहानी

शिव भगवानुवाच :-

प्रिय वत्सों ! आज से ५००० वर्ष पहले सतयुग की आदि में इस ही भारत पर पूज्य राजराजेश्वरी, श्री लक्ष्मी और राजराजेश्वर श्री नारायण अटल, अखंड, निर्विघ्न, सम्पूर्ण, सुख, शान्ति सम्पन्न राज्य करते थे । स्वयंवर के पूर्व इन्हों का नाम श्री राधे और श्री कृष्ण था । वे सर्वगुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम और सम्पूर्ण अहिंसक थे । इन्होंने सतयुग के १२५० वर्षों में सूर्यवंशी देवता कुल में ८ जन्म लिये और त्रेतायुग के १२५० वर्षों में चंद्रवंशी कुल में राज्य भाग्य सहित १२ जन्म लिये । द्वापर और कलियुग के २५०० वर्षों में वैश्य और शूद्र कुल में शिरोमणी भक्त राजा-रानी अथवा प्रजा कुल में ६३ जन्म लिये।

अब कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग में श्री नारायण के अंतिम ८४ वें जन्म के साधारण तन की वानप्रस्थ अवस्था में मैं (निराकार शिव परमात्मा) ने दिव्य प्रवेश कर इनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा रखा है और श्री लक्ष्मी का वर्तमान ८४ वां जन्म ब्रह्मा मुखवंशावली ब्रह्माकुमारी का है जिसका नाम मैंने जगदम्बा सरस्वती रखा है । और कल्प पहले की तरह ब्रह्मा के मुख कमल द्वारा सहज राजयोग और ईश्वरीय ज्ञान सिखलाकर, फिर से नई सतयुगी दैवी दुनियाँ, स्वर्ग अथवा वैकुण्ठ की पुनः स्थापना कर रहा हूँ । वही प्रजापिता ब्रह्मा और उनकी मुख्य सन्तान ब्रह्माकुमारी सरस्वती अपने तीव्र पुरुषार्थ से भविष्य जन्म में फिर से वही सतयुग के पुज्य विश्व महाराजन राजराजेश्वर श्री नारायण और विश्व महारानी राजराजेश्वरी श्री लक्ष्मी का पद प्राप्त करेंगे ।

प्रिय वत्सों ! अब मुझ विश्व के बापूजी को सम्पूर्ण पवित्रता, सुख, शान्ति सम्पन्न सत्य दैवी स्वराज्य स्थापन करने में जो कमल पुष्प समान गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए देह सहित देह के सभी संबंधियों से वृद्धि योग तोड़ मेरे साथ योग युक्त होंगे अर्थात् राजयोगी बनेंगे और पवित्र रहेंगे वही भविष्य आधा कल्प (२५०० वर्ष) में २१ जन्मों तक सतयुगी सूर्यवंशी और त्रेतायुगी चंद्रवंशी कुल में ऐसा नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी अर्थात् मनुष्य से देवता पद प्राप्त करेंगे।

(तत्कालीन) मुख्य केन्द्र
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
पांडव भवन, माऊंट आबू
(वर्तमान कालीन)
अन्य ईश्वरीय सेवा केन्द्र
आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्व विद्यालय

मुख्यालय :-
1. 5/26 A, शिकारपुर, जि. फर्रुखाबाद-209 625 (यू.पी.)
शाखाएं :-
2. ग्रा.पो. कम्पिला, जि. फर्रुखाबाद-207 505 (यू.पी.)
3. A-1,351-352, विजयविहार, रिठाला, दिल्ली-110 085
4. हाउस नं. 634, ... कॉम्प्लेक्स, सेक्टर 45 C ... चण्डीगढ़ - 160 106
5. सेक्टर 2, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता - 700 091
6. पाटील हाउस, आजाद चौक, खरीगाँव, ता. कलवा जि. ठाणे, मुम्बई - 400 605
7. 29/3 B.I. प्रकाश नगर, बेगमपेट, हैदराबाद - 500 016
8. साई दुर्गा ..., ... रोड, ... जि. वेस्ट गोदावरी - 534 102 (आन्ध्रा)
9. शिवज्योति निवास, ... मेन, ... नगर, पो. ..., बैंगलूर - 560 016